DAY 3

अध्याय 2

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

महत्वपूर्ण TOPICS

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

- **अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण**
  - 👉 प्राथमिक क्षेत्र / द्वितीयक क्षेत्र / तृतीयक क्षेत्र
  - 👉 संगठित क्षेत्र v/s असंगठित क्षेत्र
  - 👉 सार्वजनिक क्षेत्र v/s निजी क्षेत्
- **अर्थव्यस्था के विभिन्न क्षेत्रों कि तुलना**
- **भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में विभिन्न क्षेत्रों कि भूमिका**
- **आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण**
- **रोजगार और बेरोजगारी के प्रकार**
- **राष्ट्रीय आय**
- **GDP**
- **MGNREGA 2005**

अर्थव्यवस्था (ECONOMY)

■ एक ऐसी व्यस्था जिसमे एक व्यक्ति अपनी आजीविका अर्जित करता है, अर्थव्यवस्था कहलाता है l

अर्थव्यवस्था या आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण : -

- प्राथमिक / द्वितीयक / तृतीयक
- संगठित और असंगठित क्षेत्र
- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

आर्थिक गतिविधि

■ **वस्तु या सेवा के उत्पादन, उपभोग और वितरण से संबंधित काम, आर्थिक गतिविधि कहलाती है l**

■ **रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर आर्थिक गतिविधियाँ निम्नलखित क्षेत्रकों में विभाजित की जाती है :-**

(a) प्राथमिक क्षेत्रक [Primary sector]

(b) द्वितीयक क्षेत्रक [Secondary sector]

(c) तृतीयक क्षेत्रक [Tertiary sector]

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

प्राथमिक क्षेत्रक

■ प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करने की गतिविधियों को प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधि माना जाता है l

■ **Examples :-**

👉 क़ृषि, डेयरी,
👉 मत्स्य पालन, मुर्गी पालन
👉 खनीज और अयस्क का खनन उतखन्न
👉 वानिकी, लकड़ी काटना(लमबरिंग)

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

प्राथमिक क्षेत्रक

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

- यह क्षेत्र अन्य सभी उत्पादन गतिविधियों का आधार है, इसलिए इसे प्राथमिक कहा जाता है।

- चुकी हम अधिकांश प्राकृतिक उत्पाद कृषि, डेयरी, मत्स्यन और वनों से प्राप्त करते हैं, इसलिए इस क्षेत्रक को कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है।

द्वितीयक क्षेत्रक

■ वे गतिविधियाँ जिनके द्वारा कच्चे माल अथवा प्राथमिक उत्पादों को मानव के लिये उपयोगी वस्तुओं में बदला जाता है, द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ कहलाती हैं

■ **EXAMPLES :-**

- 👉 कपास के पौधे से प्राप्त रेशे से सूत कातना और कपड़े बुनना
- 👉 गन्ने से चीनी और गुड़ तैयार करना
- 👉 मिट्टी से ईंट का निर्माण
- 👉 कागज उद्योग

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

द्वितीयक क्षेत्रक

■ इस क्षेत्र में वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं, बल्कि निर्मित की जाती हैं, इसलिए इसे विनिर्माण क्षेत्र भी कह दिया जाता है

■ प्राकृतिक उत्पाद अथवा कच्चे माल से नयी वस्तुओं के विनिर्माण की प्रक्रिया उद्योगों में होती है, इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है l

तृतीयक क्षेत्रक

■ वैसी गतिविधियाँ जो प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं, तृतीयक क्षेत्र की गतिविधि कहलाती है l

■ ये गतिविधियाँ स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग या मदद करती हैं l

■ EXAMPLES:-

👉 यातायात या परिवहन
👉 भण्डारण व्यस्था
👉 संचार, बैंकिंग, शिक्षा
👉 होटल, रेस्तरा

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

तृतीयक क्षेत्रक

- तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ वस्तुओं की जगह सेवाओं का सृजन करती हैं, इसलिए तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है l
- सेवा क्षेत्रक में कुछ ऐसी अपरिहार्य सेवाएं भी हैं जो प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में योगदान नहीं करती :-
  - 👉 शिक्षक, डॉक्टर, वकील
  - 👉 धोबी, नाई, मोची
- सुचना प्रोद्योगिकी (Information Technology) पर आधारित कुछ नवीन सेवाएं :-
  - 👉 इंटरनेट कैफे, ए.टी.एम, कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर कम्पनी

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न :-(6) क्या आप जानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र में विभाजन की उपयोगिता है? व्याख्या कीजिए कि कैसे l

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अथवा

प्रश्न :-(9) तृतीयक क्षेत्रक अन्य क्षेत्रकों से अलग कैसे है ? सोदाहरण व्याख्या कीजिएl

अथवा

प्रश्न :-(15)आर्थिक गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गकृत की जाती है?

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न :-(8) निम्नलिखित व्यवसायों को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में विभाजित करें।

- दर्जी
- टोकरी बुनकर
- फूल की खेती करने वाला
- दूध - विक्रेता
- मछुआरा
- पुजारी
- कुरियर पहुंचाने वाला
- दियासलाई कारखाना में श्रमिक
- महाजन
- माली
- कुम्हार
- मधुमक्खी पालन
- अंतरिक्ष - यात्री
- कॉल सेंटर का कर्मचारी

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्राथमिक क्षेत्रक	द्वितीय क्षेत्रक	तृतीयक क्षेत्रक
(1) टोकरी बुनने वाला	दर्जी	पुजारी
(2) फूल की खेती करने वाला	दियासलाई के कारखाना में श्रमिक	कूरियर पहुँचाने वाला
(3) दूध विक्रेता		महाजन
(4) मछुआरा		अंतरिक्ष यात्री
(5) माली		कॉल सेंटर का कर्मचारी
(6) कुम्हार		
(7) मधुमक्खी पालक		

practice Questions

(1) इनमे से कौन सी गतिविधि प्राथमिक क्षेत्रक से संबंधित नहीं है?

(a) मत्स्य ग्रहण

(b) खनन

(c) कपड़ा तैयार करना

(d) लकड़ी काटना

उत्तर :- कपड़ा तैयार करना

(2) इनमे से कौन सी गतिविधि द्वितीयक क्षेत्रक से संबंधित नहीं है?

(a) ईंट तैयार करना

(b) चीनी बनाना

(c) लम्बरिंग

(d) कागज बनाना

उत्तर :- लम्बरिंग

practice Questions

(3) एक वस्तु का अधिकांशतः प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन...................... क्षेत्रक की गतिविधि है l

(a) प्राथमिक (b) द्वितीयक

(c) तृतीयक (d) सूचना प्रोधोगिकी

उत्तर :- प्राथमिक

(4)इनमे से कौन सी गतिविधि तृतीयक क्षेत्रक से संबंधित नहीं है?

(a) मत्स्य ग्रहण (b) डॉक्टर

(c) वक़ालत (d) बैंकिंग

उत्तर :- मत्स्य ग्रहण

वस्तुओं का वर्गीकरण

■ अंतिम वस्तु :-

- वह वस्तु जो उपभोक्ता तक पहुँचती है l
- उत्पादन की प्रक्रिया से बाहर हो चुकी होती है l
- अब उसमे मूल्यवृद्धि (value addition) नहीं होती l

■ मध्यव्रती वस्तु :-

- वह वस्तु जिसका प्रयोग अंतिम वस्तु और सेवा के उत्पादन के लिये किया जाता है l
- उत्पादन की प्रक्रिया में शामिल l
- अभी मूल्यांवृद्धि होनी और बाकि हो l

वस्तुओं का वर्गीकरण

- अंतिम वस्तु के मूल्य में मध्यव्रती वस्तु का मूल्य शामिल रहता है l
- GDP और राष्ट्रीय आय की गणना में सिर्फ अंतिम वस्तु और सेवा का मूल्य शामिल किया जाता है l

गेहूं (10 rs/kg) → आँटा (15 rs / kg) → बिस्कुट (3 पैकेट = 30₹)

- अंतिम वस्तु - बिस्कुट
- मध्यवर्ती वस्तु - गेहूं, आँटा

सकल घरेलू उत्पाद - GDP

■ किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, सकल घरेलू उत्पाद (स. घ. उ.) कहलाता है l

■ केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO) द्वारा GDP की गणना की जाती है l

GDP= प्राथमिक क्षेत्रक का कुल उत्पादन + द्वितीयक क्षेत्रक का कुल उत्पादन + तृतीयक क्षेत्रक का कुल उत्पादन

क्षेत्रकों में ऐतिहासिक परिवर्तन - विकसित देश

प्रारम्भिक अवस्था

- विकास की प्रारम्भिक अवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक ही आर्थिक सक्रियता का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रक रहा l
- कृषि प्रणाली में परिवर्तन से, कृषि क्षेत्र समृद्ध, अधिक उत्पादन होने लगा l
- अब अनेक लोग दूसे कार्य करने लगें, शिल्पीयों और व्यापारियों की संख्या में वृद्धि हुई
- क्रय विक्रय की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ गयी l
- इसके अतिरिक्त अनेक लोग परिवहन, प्रशासक और सैनिक कार्य इत्यादि से जुड़े थें
- फिर भी इस अवस्था में अधिकांश उत्पादित वस्तुए प्राकृतिक उत्पाद थी, जो प्राथमिक क्षेत्रक में आती थीं और अधिकांश लोग इसी क्षेत्रक में रोजगार करते थें l

क्षेत्रकों में ऐतिहासिक परिवर्तन - विकसित देश

मध्य अवस्था

- लम्बे समय (सौ वर्षों से अधिक) के बाद और विशेषकर विनिर्माण की नवीन प्रणाली के प्रचलन से कारखाने अस्तित्व में आए और उनका प्रसार होने लगा।
- जो लोग पहले खेतों में काम करते थे, उनमें से बहुत अधिक लोग अब कारखानों में काम करने लगे।
- कारखानों में सस्ती दरों पर उत्पादित वस्तुओं का लोग इस्तेमाल करने लगे।
- कुल उत्पादन एवं रोजगार की दृष्टि से द्वितीयक क्षेत्रक सबसे महत्त्वपूर्ण हो गया।

क्षेत्रकों में ऐतिहासिक परिवर्तन - विकसित देश

अंतिम या वर्तमान अवस्था

- विगत 100 वर्षों में, विकसित देशों में द्वितीयक क्षेत्रक से तृतीयक क्षेत्रक की ओर पुनः बदलाव हुआ है।
- कुल उत्पादन की दृष्टि से सेवा क्षेत्रक का महत्त्व बढ़ गया।
- अधिकांश श्रमजीवी लोग सेवा क्षेत्रक में ही नियोजित हैं।
- विकसित देशों में यही सामान्य लक्षण देखा गया है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

कृषि → उद्योग → सेवा

विभिन्न क्षेत्रकों की तुलना - भारत

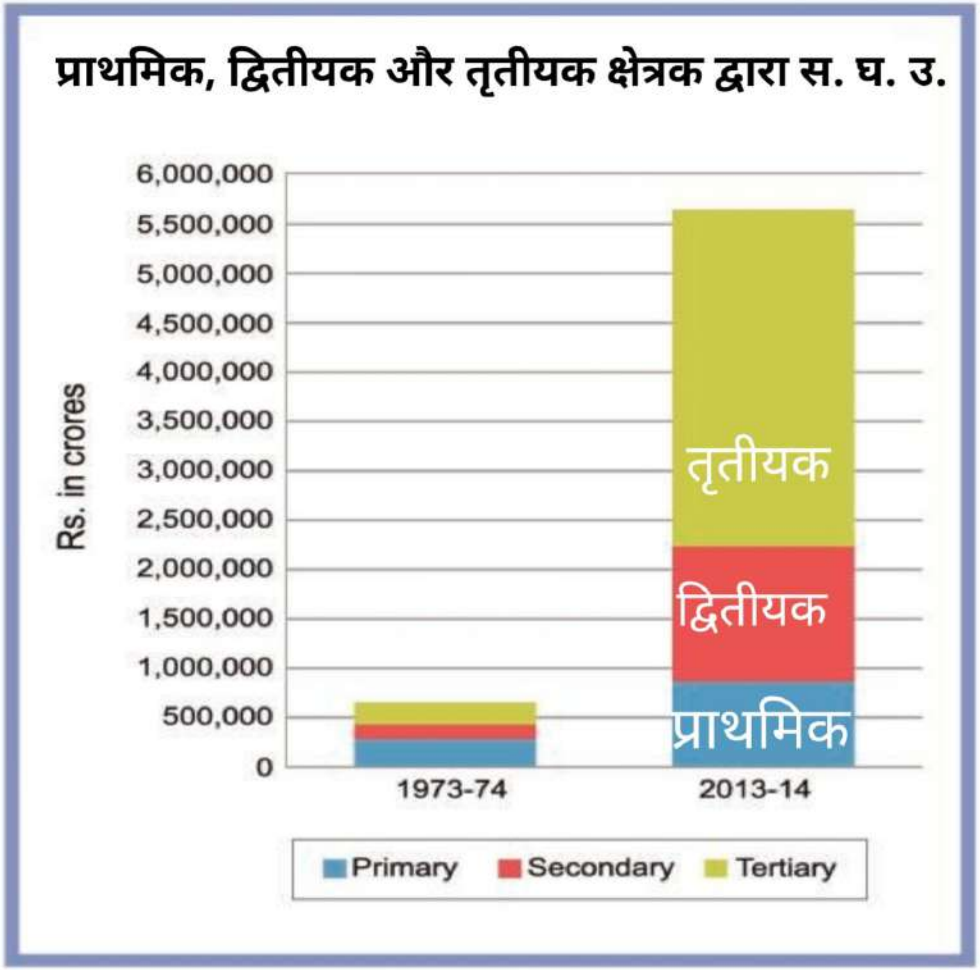

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

आरेख का अवलोकन करते हुए निम्नलिखित का उत्तर दें-

- **1971-72 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्रक कौन था?**
- **2011-12 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्रक कौन था?**
- **क्या आप बता सकते हैं कि तीस वर्षों में किस क्षेत्रक में सबसे अधिक संवृद्धि हुई?**
- **2011-12 में भारत का GDP क्या है?**

विभिन्न क्षेत्रकों की तुलना - भारत

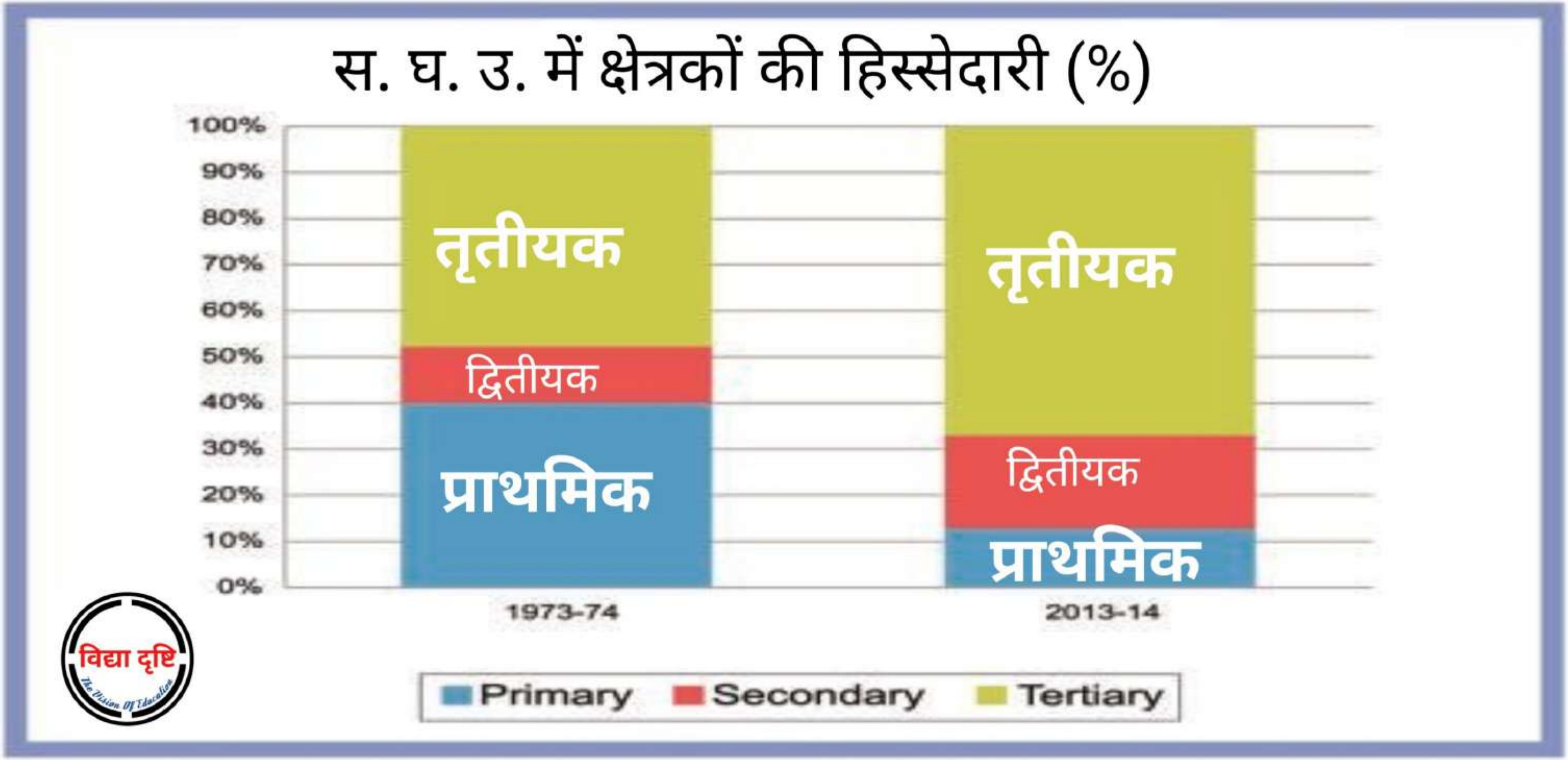

भारत में तृतीयक क्षेत्र का महत्व या भूमिका

- वर्ष 1971-72 और 2011-12 के बीच चालीस वर्षों में यद्यपि सभी क्षेत्रकों में उत्पादन में वृद्धि हुई, परन्तु सबसे अधिक वृद्धि तृतीयक क्षेत्रक के उत्पादन में हुई।

- परिणामत: वर्ष 2011-12 में भारत में प्राथमिक क्षेत्रक को प्रतिस्थापित करते हुए तृतीयक क्षेत्रक सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्रक के रूप में उभरा।

भारत में तृतीयक क्षेत्र का महत्व या भूमिका

■ लोगों की आय जैसे-जैसे बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे उनमें नई सेवाओं की माँग भी बढ़ने लगी है,जैसे रेस्तरां, पर्यटन, निजी हस्पताल, निजी विद्यालय, द्रुत परिवहन, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की।

■ पिछले कुछ दशकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवायें महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य होती जा रही हैं।इन सेवाओं के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हो रही है ।

■ कुछ अन्य प्रकार की छोटी-मोटी सेवाओं में जैसे छोटे-छोटे दुकानदारों, मरम्मत कार्यों में लोगों,परिवहन कार्य में लगे लोगों की गिनती में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है।

भारत में तृतीयक क्षेत्र का महत्व या भूमिका

सेवा क्षेत्र में मुख्यतः दो प्रकार के लोग नियोजित :-

(a) कुशल और शिक्षित श्रमिक

■ ऐसे सेवाओं की संख्या सिमित है जिसमे अत्यंत कुशल और शिक्षित श्रमिकों को रोजगार मिलता है l

(b) छोटी दुकान, मरम्मत कार्य,परिवहन

■ ऐसी सेवाओं में बहुत अधिक संख्या में लोग लगे हुएं हैं l

■ ये लोग बड़ी मुश्किल से अपनी जीविका चला पाते हैं l

■ ये इस प्रकार की कम आय वाली सेवाओं में इसलिए लगे हैं, क्यूंकि इनके पास कोई अन्य वैकल्पिक अवसर नहीं है l

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों की परस्पर निर्भरता

द्वितीयक क्षेत्रक का प्राथमिक क्षेत्रक पर निर्भरता

- **यदि किसान किसी चीनी मिल को गन्ना बेचने से इंकार कर दे**
- **तो चीनी मिल बंद हो जायेगा**

प्राथमिक क्षेत्रक का द्वितीयक क्षेत्रक पर निर्भरता

- **यदि कपड़ा बनाने वाली कम्पनीयां भारतीय बाजार से कपास न खरीदे, अन्य देशों से कपास आयात करे**
- **तो भारत में कपास की कीममत गिर शक्ति है जिससे किसानो को नुकसान होगा**

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों की परस्पर निर्भरता

प्राथमिक क्षेत्रक का तृतीयक क्षेत्रक पर निर्भरता

- **यदि परिवहन महंगा हो जाये तो**
- **किसानों को बाजार से बीज, किटनाशक, उर्वरक इत्यादि लाने और अपने उत्पाद को बाजार तक पहुँचाने की लागत बढ़ जाएगी**
- **कृषि लागत बढ़ जाएगी, किसानों को नुकसान होगा**

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों की परस्पर निर्भरता

तीनो क्षेत्रकों की आपस में निर्भरता

- यदि ट्रांसपोर्ट हड़ताल कर दे तो
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जरुरी खाने पिने वाली चीजें नहीं पहुँच पायेगी
- उद्योग तक कच्चा माल नहीं पहुँच पायेगा
- किसान अपना कृषि उत्पाद बेच नहीं पाएंगे
- ट्रांसपोर्ट क्षेत्र में काम करने वाले लोग को नुकसान होगा

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों की परस्पर निर्भरता

निष्कर्ष :-

- **तीनो क्षेत्रकों का विकास एक दूसरे पर निर्भर करता है**

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

भारत में आर्थिक क्षेत्रकों में ऐतिहासिक परिवर्तन

■ 1972 तक भारतीय GDP में कृषि अथार्थ प्राथमिक क्षेत्र प्रमुख था l

■ कृषि पद्धतियों में सुधार से कृषि में अधिशेष उत्पादन होने लगा, और कुछ लोग कृषि से उद्योग क्षेत्र में स्थानत्रित होने लगें l

■ बहुत जल्द ही द्वितीयक क्षेत्र की भूमिका बढ़ने लगी l

■ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र के विकास के कारण व्यापार, परिवहन जैसी सेवाओं को बढ़ावा मिला

■ 1971-72, और 2011-12 के बीच सबसे ज्यादा वृद्धि सेवा क्षेत्र में हुई l

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न :-(12) " भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है l " क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए l

प्रश्न :-(13) भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करता है l ये लोग कौन हैं?

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न :-(4) विषम की पहचान करें और बताइए क्यों?

(क) पर्यटन-निर्देशक, धोबी, दर्जी, कुम्हार

(ख) शिक्षक, डॉक्टर, सब्जी विक्रेता, वकील

(ग) डाकिया, मोची, सैनिक, पुलिस स्टेशन

(घ) एम.टी.एन.एल.. भारतीय रेल, एयर इण्डिया, जेट एयरवेज, ऑल इण्डिया रेडियो ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न :-(4) विषम की पहचान करें और बताइए क्यों?

(क) पर्यटन-निर्देशक, धोबी, दर्जी, कुम्हार

(ख) शिक्षक, डॉक्टर, सब्जी विक्रेता, वकील

(ग) डाकिया, मोची, सैनिक, पुलिस स्टेशन

(घ) एम.टी.एन.एल.. भारतीय रेल, एयर इण्डिया,
जेट एयरवेज, ऑल इण्डिया रेडियो
।

(i) पर्यटन-निर्देशक तृतीयक क्षेत्रक से सम्बन्ध रखता है जबकि बाकी द्वितीयक क्षेत्रक से।

(ii) असंगत-सब्जी विक्रेता क्योंकि वह द्वितीयक क्षेत्रक से सम्बन्ध रखता है जबकि बाकी तृतीयक क्षेत्रक से।

(iii) असंगत-सैनिक-क्योंकि वह सेना विभाग से सम्बन्ध रखता है जबकि बाकी तीन सिविल विभाग से।।

(iv) असंगत-रेलवे क्योंकि इसका सम्बन्ध भूमि से है जबकि बाकी का सम्बन्ध वायु से है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

Practice Question

प्रश्न :- निम्नलिखित आरेख (graph) का ध्यान से अध्ययन करें और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दें l

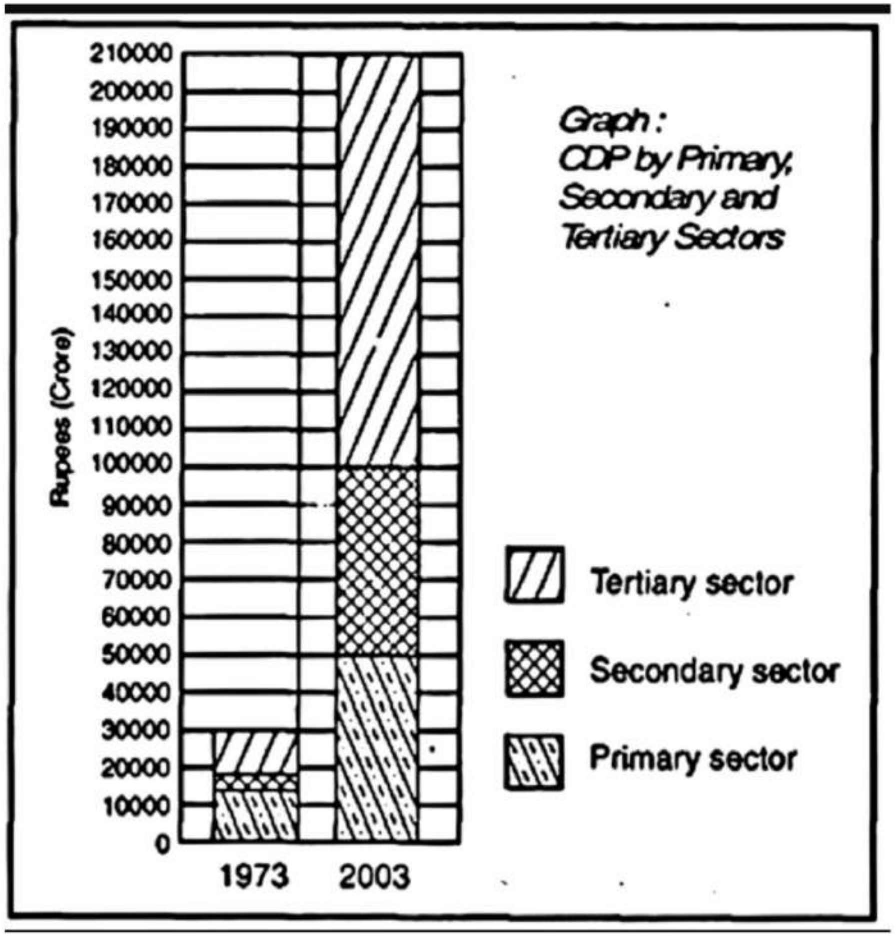

- 1973 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्रक कौन था ?
- 2003 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्रक कौन था ?
- क्या आप बता सकते हैं कि तीस वर्षो में किस क्षेत्रक में सबसे अधिक संवृद्धि हुई?
- 2021-22 में भारत कि GDP क्या थी?

उत्तर: - 👉 प्राथमिक क्षेत्रक

👉 तृतीयक क्षेत्रक

👉 तृतीयक क्षेत्रक

👉 😂😂😂😂

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों में रोजगार

आलेख 3 – रोजगार में क्षेत्रकों की हिस्सेदारी (%)

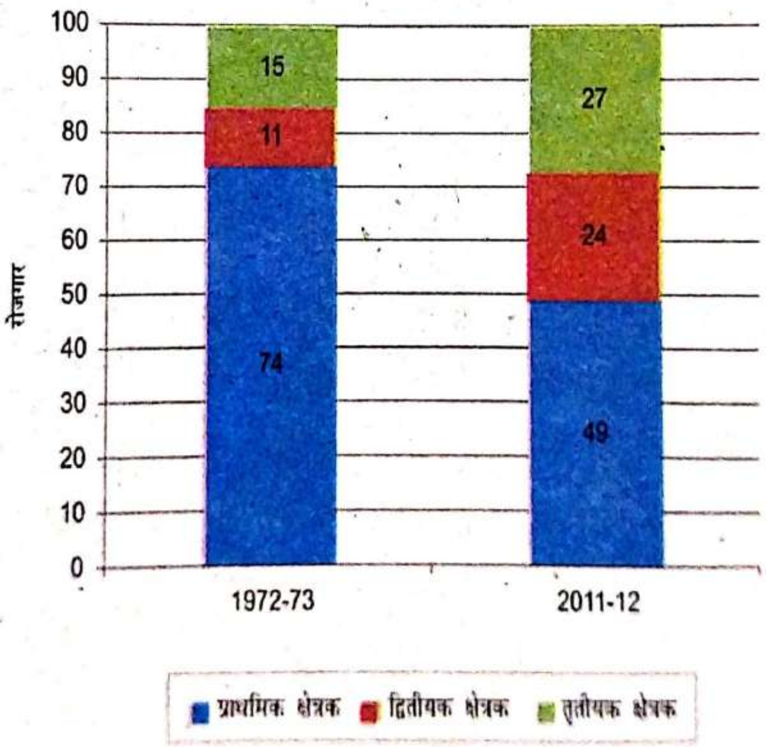

आलेख 2 – स. घ. उ. में क्षेत्रकों की हिस्सेदारी (%)

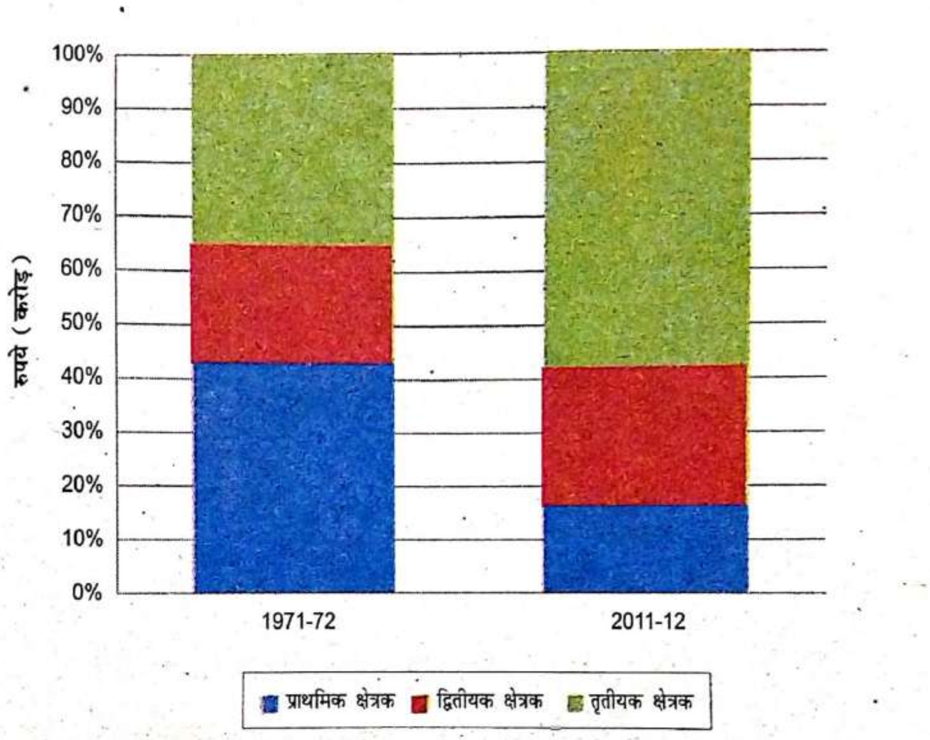

ग्राफ का विश्लेषण

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

■ देश में आधे से अधिक श्रमिक प्राथमिक क्षेत्रक, मुख्यतः कृषि क्षेत्र, में काम कर रहे हैं जिसका GDP में योगदान केवल एक-चौथाई है।

■ अतः कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न या छिपी हुई बेरोजगारी (अल्पबेरोजगारी) है ।

■ इसकी तुलना में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक का GDP में हिस्सा तीन-चौथाई है। परन्तु, ये क्षेत्र आधे से भी कम लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।

practice Question

प्रश्न :- भारत में अधिकत्तर लोग प्राथमिक क्षेत्रक में क्यों नियोजित हैं ?

उत्तर :- भारत में अभी भी लोग अन्य क्षेत्रकों की तुलना में प्राथमिक क्षेत्रक में अधिक नियोजित हैं इसके प्रमुख कारण इसप्रकार हैं :-

- **द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में रोजगार का पर्याप्त सृजन नहीं हुआ**

- **हमारे देश के अधिकत्तर लोग अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं इसलिए वे अभी भी प्राथमिक क्षेत्रक से संबंधित कार्यों जैसे कृषि, खनन, लकड़ी काटने, पशु - पालन और मत्स्यन आदि के काम में लगे हुएं हैं।**

NCERT अभ्यास प्रश्न

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

प्रश्न :-(24) निम्नलिखित तालिका में तीनों क्षेत्रकों का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) रूपये (करोड़) में दिया गया है :

वर्ष	प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
1950	80,000	19,000	39,000
2010	8,65,000	13,70,000	30,10,000

NCERT अभ्यास प्रश्न

(a) वर्ष 1950 एवं 2010 के लिये GDP में तीनों क्षेत्रकों की हिस्सेदारी की गणना कीजिए l

वर्ष 1950

क्षेत्रक	करोड़ ₹ में	प्रतिशत
प्राथमिक क्षेत्रक	80,000	58%
द्वितीयक क्षेत्रक	19,000	14%
तृतीयक क्षेत्रक	39,000	28%
कुल	138,000	100%

(b) इन आंकड़ों के माध्यम से दंड - आलेख के रूप में प्रदर्शित कीजिए ।

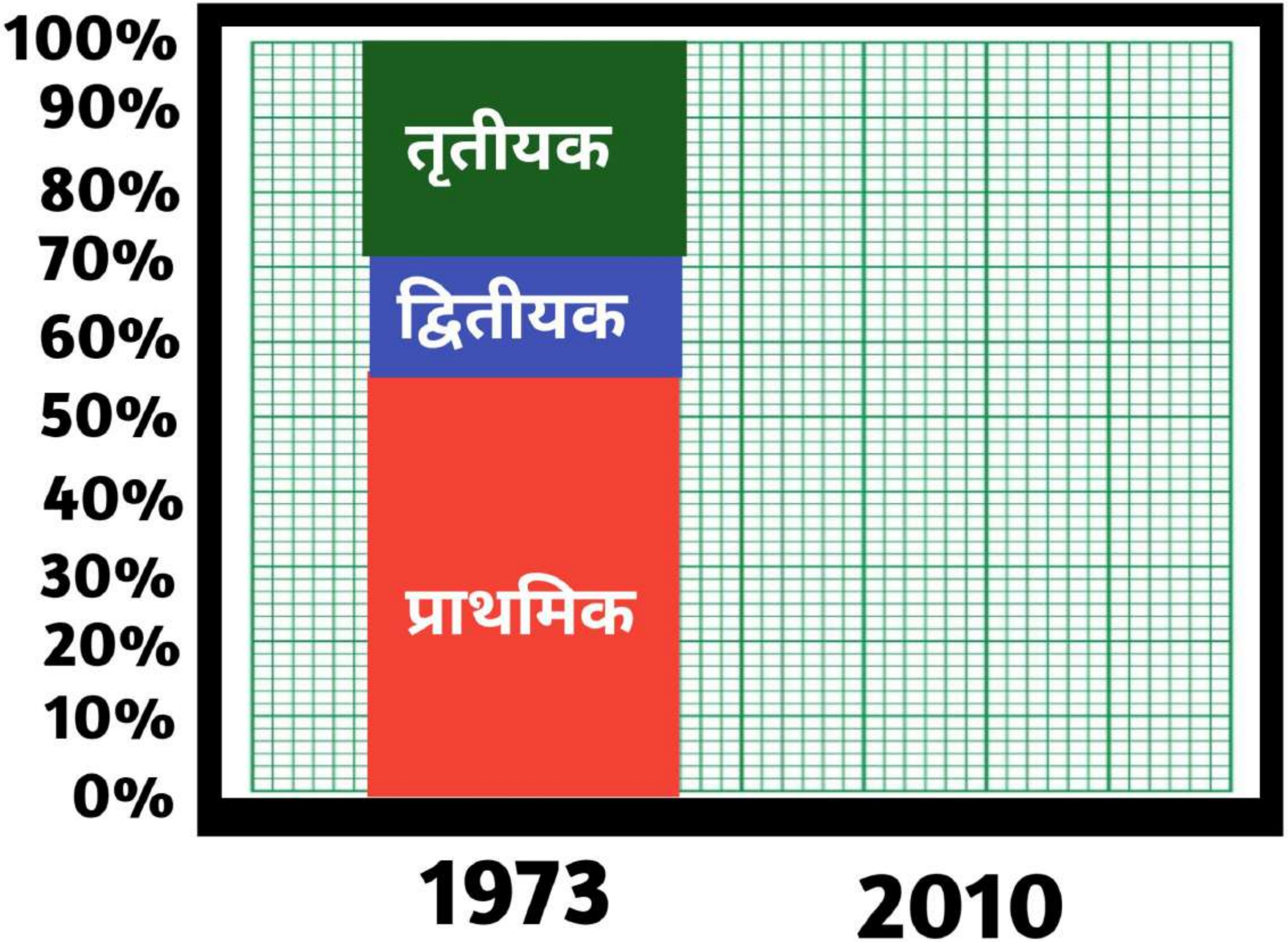

(c) दंड आलेख से हम क्या निष्कर्ष प्राप्त करते हैं?

- जी०डी०पी० में 1950 की अपेक्षा 2000 में प्राथमिक क्षेत्रक का प्रतिशत घटा है जो........ से......... तक पहुँच गया।

- जी०डी०पी० में 1950 की अपेक्षा 2000 में द्वितीय क्षेत्रक का प्रतिशत थोड़ा सा बढ़ा है।

- जी॰डी॰पी॰ में 1950 को अपेक्षा 2000 में तृतीयक क्षेत्रक का प्रतिशत बहुत बढ़ा है जो.......... से.......... हो गया।

रोजगार और बेरोजगारी

रोजगार

वैसी आर्थिक क्रिया जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी आजीविका अर्जित करता है, रोजगार कहलाता है ।

बेरोजगार

वह व्यक्ति जिसमे काम करने की योग्यता हो और वह प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने को तैयार है लेकिन काम नहीं मिल रहा, बेरोजगार कहलाता है और इस अवस्था को बेरोजगारी कहते हैं ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

बेरोजगारी के प्रकार

(a) अल्पबेरोजगारी या प्रच्छन्न बेरोजगारी

(b) शिक्षित बेरोजगारी

- ज़ब शिक्षित,प्रशिक्षित व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिलता l

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

प्रच्छन्न बेरोजगारी

■ जब एक काम को करने में आवश्यकता से अधिक लोग लगे होते हैं तो उन सबको पूरा काम नहीं मिल पता l

■ यदि कुछ लोगों को काम से हटा दिया जाये तो भी उत्पादन पे कोई प्रभाव नहीं पड़ता l

ऐसी बेरोजगारी निम्नलिखित क्षेत्रों में देखने को मिलती है :-

(a) कृषि क्षेत्र

(b) सेवा क्षेत्र में अनियमित श्रमिक जैसे :-

प्लम्बर, पेंटर, मरम्मत कार्य करने वाले, ठेला खींचने वाले

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

प्रच्छन्न बेरोजगारी

प्रच्छन्न बेरोजगारी की समाप्ति के उपाय :-

■ सिंचाई की सुविधाओं को बढ़ाना चाहिए ताकि किसान एक के स्थान पर वर्ष में दो या तीन फसलें पैदा कर सकें।

■ ऐसे छोटे किसानों के परिवारों के कुछ सदस्य आस-पास के नगरों या कस्बों में कारखानों में काम करके अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

■ नगरों में भी बहुत से मज़दूरों को निरन्तर काम नहीं मिलता और वे प्रच्छन्न बेरोजगारी का शिकार बन जाते हैं। उनके लिए नए-नए कारखाने खोलने की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उन्हें निरन्तर काम मिलता रहे।

कृषि क्षेत्र की समस्या

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

- असिंचित भूमि
- आय में उतार - चढ़ाव
- कर्ज का बोझ
- मौसम के बाद या पहले कोई काम नहीं
- कृषक कटाई के तुरंत बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने के लिये मजबूर

कृषि क्षेत्र में रोजगार का सृजन

कृषि क्षेत्र में सुधार या रोजगार सृजन के लिये सरकार द्वारा अग्रलिखित प्रयास किये गए हैं :-

- किसानों को कृषि उपकरण खरीदने के लिये ऋण
- सूखे क्षेत्रों की सिंचाई के लिये बांध निर्माण
- बीज और उर्वरक पर सब्सिडी
- भंडारण की सुबिधा
- परिवहन सुबिधा को बढ़ाना

शहरी क्षेत्र में रोजगार का सृजन

- क्षेत्रीय शिल्प उद्योग व सेवाओं को प्रोत्साहन
- प्रयत्न उद्योग को प्रोत्साहन
- अनावश्यक सरकारी नीतियों व नियमों में परिवर्तन
- मुलभुत सुविधाएं, तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना
- आसान शर्तों पर ऋण या आर्थिक सहायता प्रदान करना

जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

- रोजगार के अवसर, जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़ते।
- कृषि व शहरी क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी बढ़ जाती है।
- संसाधनों पर बोझ बढ़ जाता है।
- अधिक व्यक्ति उपलब्ध होने से रोजगार से प्राप्त आय निम्न स्तर पर आ जाती है।
- वस्तुओं व सेवाओं की कीमत बढ़ जाती है और उपलब्धता कम हो जाती है।

practice Question

अल्प बेरोजगारी तब होती है जब लोग

(अ) काम करना नहीं चाहते हैं।

(ब) सुस्त ढंग से काम कर रहे हैं।

(स) अपनी क्षमता से कम काम कर रहे हैं।

(द) उनके काम के लिए भुगतान नहीं किया जाता है।

श्रमिक

कुशल श्रमिक

जिसे किसी कार्य के लिये उचित प्रशिक्षण मिला हो

अकुशल श्रमिक

जिसे किसी कार्य के लिये प्रशिक्षण न मिला हो

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न (10) प्रच्छन्न बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं ? शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से उदाहरण देकर व्याख्या कीजिये ।

प्रश्न (11) खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच विभेद कीजिये ।

MGNREGA - 2005

- Mahtma gandhi national rural employment gurantee act
- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम
- सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में,उन सभी लोगों को जो काम करने में सक्षम हैं और जिन्हे काम की जरूरत है 100 दिन की रोजगार की गारंटी दी गई है

MGNREGA - 2005

काम का अधिकार

प्रमुख प्रावधान

- 100 दिनों के रोजगार की गारंटी
- रोजगार न मिलने पर या कम मिलने पर बेरोजगारी भत्ता
- अपने गाँव या आस पास के क्षेत्र में ही कार्य स्थल होना
- एक तिहाई रोजगार महिलाओं के लिये सुरक्षित
- गरीबों में भी अति गरीब लोगों को रोजगार प्रदान करना
- उस तरह के कार्यों को प्राथमिकता, जिनसे भविष्य में भूमि से उत्पादन बढ़ाने में मदद मिले

संगठित और असंगठित क्षेत्र

- नियोजित होने के आधार पर आर्थिक गतिविधियों या अर्थव्यस्था को दो क्षेत्रों में बाँटा गया है :-

(a) संगठित क्षेत्र (organised sector)

(b) असंगठित क्षेत्र (unorganised sector)

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

संगठित क्षेत्र

- सरकार द्वारा पंजीकृत, सरकारी नियम और विनियम का अनुपालना
- रोजगार की अवधि नियमित, काम के घंटे निश्चित
- नियमित वेतन, अधिक वेतन
- रोजगार सुरक्षा का लाभ
- अधिक काम पर अतिरिक्त वेतन
- सवेतन छुट्टी, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि(कर्मचारी योजना)
- चिकित्सकीय लाभ, सेवानिवृति पर पेंशन
- कार्य की अच्छी परिस्थितियाँ

असंठित क्षेत्र

- समान्यतः सरकारी नियंत्रण से बाहर , सरकारी नियम और विनियम का अनुपालना नहीं
- रोजगार की अवधि नियमित नहीं , काम के घंटे निश्चित नहीं
- नियमित वेतन नहीं , कम वेतन
- रोजगार सुरक्षा का लाभ नहीं
- कर्मचारी योजना का लाभ नहीं
- निम्नलिखित स्तरीय कार्य परिस्थितियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों में असंठित क्षेत्र

- भूमिहीं कृषि श्रमिक
- छोटे और सीमांत किसान
- फ़सल बटाइदार
- कारीगर :- बुनकर, बढ़ई, लुहार, सुनार

- भारत में लगभग 80% ग्रामीण परिवार छोटे और सीमांत किसानों की श्रेणी में आते हैं
- इन किसानों को समय से बीज, कृषि - उपकरण, साख सुबिधा उपलब्ध कराने की जरूरत है

शहरी क्षेत्रों में असंठित क्षेत्र

- लघु उद्योगों के श्रमिक
- निर्माण,व्यापार एवं परिवहन में कार्यरत आकस्मिक श्रमिक
- सड़कों पर विक्रेता का काम करने वालों
- सर पर बोझा धोने वाले श्रमिक
- कबाड़ उठाने वाले

लघु उद्योग को कच्चे माल की प्राप्ति और उत्पाद के विपण के लिये सरकारी मदद की आवश्यकता है

असंठित क्षेत्र के मजदूरों की सुरक्षा

असंगठित क्षेत्रक के काम करने वाले श्रमिकों को निम्न कारणों से संरक्षण देने की आवश्यकता है :-

(1) असंगठित क्षेत्रक में काम करने वाले श्रमिकों को कोई निश्चित काम नहीं मिलता और कई दिन उन्हें बेकार रहना पड़ता है। इसलिए उन्हें संरक्षण की आवश्यकता है।

(ii) असंगठित क्षेत्रक में काम करने वालों का वेतन प्रायः कम होता है और वह भी निश्चित नहीं होता इसलिए उन्हें संरक्षण दिया जाना चाहिए।

(ii) असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिको को कोई निश्चित छुटियाँ भी नहीं मिलती इसलिए ये काम के नीचे पिस कर रह जाते हैं।

(iv) उन्हें रिटायर होने में पश्चात् कोई पेंशन आदि भी नहीं मिलती इसलिए उन्हें संरक्षण की आवश्यकता होती है।

(ii) फर्मों और कारखानों के मालिक, विशेषकर असंगठित क्षेत्रक में बहुत से सरकारी नियमों का पालन भी नहीं करते इसलिए उन्हें नियमों में बाँधने के लिए श्रमिकों को संरक्षण देना आवश्यक है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न (14) "असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है l "
क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए l

प्रश्न (16) संगठित और असंठित क्षेत्रकों में विदमन रोजगार परिस्थितिया की तुलना कीजिये l

प्रश्न (17) मनरेगा 2005 के उद्देश्य की व्यख्या कीजिये l

प्रश्न (18) असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है - मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य l उदाहरण सहित व्यख्या कीजिये l

कृषि एक असंगठित क्षेत्रक

- काम के घंटे निश्चित नहीं
- कृषि मजदूरों को दैनिक मजदूरी के अलावा कोई अन्य सुविधा नहीं
- नियम विनियम का अनुपालन नहीं
- समाजिक सुरक्षा का लाभ नहीं

सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक

स्वामित्व के आधार पर आर्थिक गतिविधियों को निम्नलिखित क्षेत्रकों में बाँटा गया है :-

(a) सार्वजनिक क्षेत्रक (public sector)

(b) निजी क्षेत्रक (private sector)

सार्वजनिक क्षेत्रक

- परिसम्पतियों पर सरकार का नियंत्रण
- उद्देश्य समाज कल्याण

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग (public sector industries)

- वे उद्योग जिनका स्वामित्व राज्य सरकार या केंद्रीय सरकार के किसी संगठन के पास होता है
- जैसे :- भारतीय रेल, डाकघर
- ऐसे उद्योग राज्य द्वारा अपने नियंत्रण में चलाये जाते हैं और यहाँ पर सरकारी कानून लागु होते हैं

new text

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

निजी क्षेत्रक

- परिसम्पतियों पर स्वामित्व व्यक्ति या कंपनी का
- उद्देश्य लाभ कमाना

निजी क्षेत्र के उद्योग

- वे उद्योग जिनका स्वामित्व कुछ व्यक्तियों अथवा फर्मों या कंपनियों के पास होता है
- जैसे :- TISCO, Reliance

देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक का योगदान

सार्वजनिक क्षेत्रक (Public Sector) का होना अनिवार्य है, इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है:-

(1) सार्वजनिक क्षेत्रक बहुत सी आवश्यक वस्तुओं को उचित दामों में उपलब्ध करवाता है जो कि निजी क्षेत्र कभी भी नहीं कर सकता।

(ii) सार्वजनिक क्षेत्रक भारी उद्योगों का निर्माण कर सकता है क्योंकि इनमें बहुत से धन की आवश्यकता पड़ती है। निजी क्षेत्र में ऐसा करना प्रायः असम्भव सा होता है।

(iii) सार्वजनिक क्षेत्रक पर अधिकतर सरकार का नियन्त्रण होता है इसलिए जनसाधारण के कल्याण हेतु यह कई बार अपने पास से भी व्यय करके लोगों के भले के लिए अनेक वस्तुओं का उत्पादन कर देती है। लोगों को कई बार गेहूं, चावल आदि वस्तुओं को सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा सस्ते दामों पर भी उपलब्ध करा देती हैं।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न (18) अपने क्षेत्र से उदाहरण देकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना कीजिए l

प्रश्न (19) सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के तीन उदाहरण दीजिए और व्यख्या कीजिये कि सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यन्वयन क्यों किया जाता है ?

प्रश्न (20) व्यख्या कीजिये कि किसी देश के आर्थिक विकास से सार्वजनिक क्षेत्रक कैसे योगदान करता है ?

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न (1) कोष्ठक में दिए गए सही विकल्प का प्रयोग कर रिक्त स्थानों कि पूर्ति किजिए -

■ सेवा क्षेत्रक में रोजगार के उत्पादन के सामान अनुपात में वृद्धि........................l (हुई है /नहीं हु

उत्तर :- नहीं हुई है

■ .... क्षेत्रक के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं l (तृतीयक /कृषि)

उत्तर :- कृषि

■ भारत में.................. अनुपात में श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम कर रहे हैं l (बड़े /छोटे)

उत्तर :- बड़े

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

■ .... क्षेत्रक के अधिकांश श्रमिक को रोजफर सरक्षा प्राप्त होती है l (संगठित /असंगठित)

uttr:- संगठित

■ कपास एक..... उत्पादक है और कपड़ा एक......... उत्पाद है l

उत्तर :- प्राकृतिक, विनिर्मित

■ प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों की गतिविधियाँ......... है l (स्वतंत्र / परस्पर निर्भर)

उत्तर :- परस्पर निर्भर

NCERT अभ्यास प्रश्न

प्रश्न (2) सही उत्तर का चयन करें

(अ) सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक आधार पर विभाजित हैं।

(क) रोजगार की शर्तों
(ख) आर्थिक गतिविधि के स्वभाव
(ग) उद्यमों के स्वामित्व
(घ) उद्यम में नियोजित श्रमिकों की संख्या

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

NCERT अभ्यास प्रश्न

(स) किसी वर्ष में उत्पादित.........कुल मूल्य को स.घ. उ. कहते हैं।

(क) सभी वस्तुओं और सेवाओं
(ख) सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं
(ग) सभी मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं
(घ) सभी मध्य एवं अंतिम वस्तुओं और सेवाओं

NCERT अभ्यास प्रश्न

कृषि क्षेत्रक की समस्या

1. असिंचित भूमि
2. फसलों का कम मूल्य
3. कर्ज भार
4. मंदी काल में रोजगार का अभाव
5. कटाई के तुरन्त बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने की विवशता

कुछ संभावित उपाय

(अ) कृषि-आधारित मिलों की स्थापना

(ब) सहकारी विपणन समितियाँ

(स) सरकार द्वारा खाद्यान्नों की वसूली

(द)सरकार द्वारा नहरों का निर्माण

(य) कम ब्याज पर बैंकों द्वारा साख उपलब्ध कराना